'कर्मवीर' की तेजस्विता

डॉ0 संतोष कुमार मिश्रा

शेखर जोशी ने लिखा है, ''कर्मवीर' स्वतत्रंता–संग्राम का आत्मज था। महात्मा गाँधी के दक्षिण–अफ्रीफा से भारत लौट आने के पश्चात् समस्त भारत में एक अभिनव राजनैतिक चेतना के जन्म की अनुभूति जन–जन में जाग्रत हो रही थी। मध्य प्रदेश में पंडित विष्णुदत्त शुक्ल और पं. माधवराव सप्रे जैसी विभूतियाँ यह महसूस कर रही थीं कि इस जागृति को अभिव्यक्ति देने के लिए कोई सशक्त पत्र–माध्यम होना चाहिए। 'कर्मवीर' इसी संकल्प में से जन्मा। पं. माधवराव सप्रे को उसका संपादक चुनने में अधिक परेशानी नहीं हुई। '

पत्रकार माखनलाल चतुर्वेदी 'कर्मवीर' पत्रिका के माध्यम से स्वाधीनता आंदोलन के एक तेजस्वी सिपाही के रूप में देखे जाने लगे। यह माखनलाल जी की अपनी तेजोमयता थी जिसके फलस्वरूप 'कर्मवीर' स्वाधीनता आंदोलन की व्यापक जिम्मेवारियों को लेकर काम कर रही थी। 'कर्मवीर' का क्षेत्र भी बहुत व्यापक हो गया था। राष्ट्रीय चेतना की आवाज को जिसने प्रखर से प्रखरतम बनाया उस व्यक्ति का नाम है पं. माखनलाल चतुर्वेदी। शेखर जोशी ने एक जगह लिखा है, ''कर्मवीर की परिधि व्यापक थी।